पावन जीवन चरित्र

श्रीश्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज जी का जीवन चरित्र

SGD

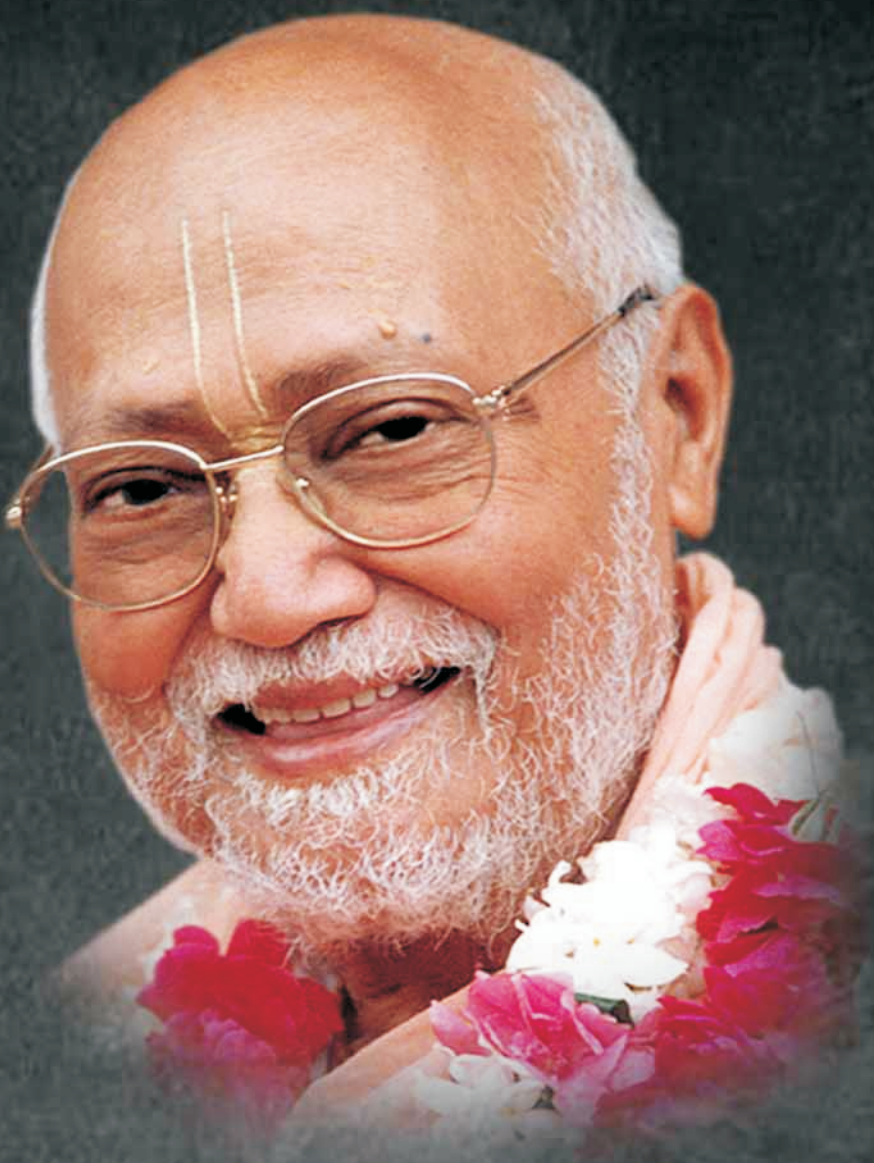

निखिल भारत श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ
प्रतिष्ठान के प्रतिष्ठाता,
नित्यलीला प्रविष्ट ॐ 108
श्री श्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज विष्णुपाद जी के
प्रियतम शिष्य, त्रिदण्डिस्वामी
श्रीमद् भक्तिबल्लभ तीर्थ गोस्वामी महाराज
जी द्वारा सम्पादित

SGD

प्रथम खंड

भाग - 18

श्रीमति कुसुम कुमारी देवी की अद्भुत वैष्णव सेवा

श्रीलगुरुदेव

SGD

बाघराय की एक दरिद्र महिला-भक्त, श्रीमति कुसुम कुमारी देवी की अद्भफत वैष्णव-सेवा प्रवृत्ति देख कर सभी चमत्कृत हो उठे थे । हुआ ऐसा कि जब गुरु महाराज जी अपनी प्रचार पार्टी के साथ बंगला देश पहुँचे तो उक्त महिला ने गुरु महाराज जी से अनेक बार अनुनय-विनय की कि वे इस

बार उसके घर ठहरें। गरीब महिला का भक्ति भाव देख कर गुरु महाराज जी ने उसकी प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। अपने घर में ठहरा कर उक्त गरीब महिला ने जिस भाव से सभी वैष्णवों की खूब सेवा की, वह धनी घर में भी देखने को नहीं मिलती। बाद में पता चला कि उक्त महिला ने अपना वह मकान, जिसमें वह स्वयं रहती थी, किसी को बेच दिया था और उसी पैसे से गुरु वैष्णवों की सेवा की। जिसको उसने मकान बेचा

उससे इस बात की अनुमति ले ली थी कि जब तक गुरु-वैष्णव लोग यहाँ रहेंगे तब तक वे उचित व्यवहार करेंगे, महात्माओं के चले जाने के बाद मकान के नए मालिक उक्त मकान पर कब्जा कर सकते हैं। बिक्री किए गए मकान में ही उक्त गरीब महिला ने श्रीगुरु व वैष्णवों की सेवा की। उसने सेवा का सुयोग प्राप्त करने के लिए ही आर्ति के साथ, यह जानते हुए भी कि उसके बाद वृक्ष के नीचे रहने वाले रास्ते के

भिखारियों की तरह अपनी बाकी ज़िन्दगी बितानी पड़ेगी-प्राणपन से सेवा की। गुरु महाराज जी को जब यह सब मालूम पड़ा तो वे अत्यन्त दुःखित और मर्माहत हो उठे।

श्री गुरु महाराज जी ने जब उक्त महिला से इस विचार-रहित कार्य को करने का कारण पूछा तो महिला ने कहा-"वैष्णव-सेवा द्वारा ही जीव का वास्तविक मंगल होता है। क्या पता अपने इस जीवन में फिर कभी गुरु-वैष्णव-सेवा

का ऐसा स्वर्ण अवसर मिलेगा या नहीं? सो, मैंने अपना जीवन व सामर्थ्य रहते-रहते ये अतिशय शुभ, सेवा कार्य पूरा कर लिया है। अब मृत्यु भी हो जाए तो मुझे कोई दुःख नहीं होगा।"

महिला की बात सुन कर गुरु महाराज जी विस्मित हो उठे और सोचने लगे कि हृदय में वैष्णव-सेवा की ऐसी प्रवृत्ति होना दुर्लभ है।

इस घटना के कुछ समय पश्चात् कुसुम कुमारी देवी ने

श्रील गुरु महाराज जी से हरिनाम-मन्त्र आदि ग्रहण किया व बाकी का अपना सारा जीवन श्रीचैतन्य महाप्रभु जी की जन्मलीला भूमि श्रीधाम मायापुर के योगपीठ में बिताया। वहाँ पर उन्होंने एकान्तिक निष्ठा द्वारा गौरभजन का कठोर व्रत लिया व तीव्र भजन करते-करते अपने शरीर को छोड़ दिया व स्वधाम को प्राप्त हो गयी।

श्रीगुरु महाराज जी अपने आश्रितों को हरिकथा सुनाते

समय आदर्श वैष्णव-सेवा एवं भगवद् गौरांग निष्ठा का उदाहरण देने के लिए अक्सर कुसुम कुमारी की बात सुनाया करते थे।

श्रीलगुरुदेव